डॉ॰ पूनम कुमारी

अध्यक्ष–हिन्दी विभाग

एस॰ बी॰ कॉलेज, आरा

वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय,आरा

स्त्री विमर्श और महादेवी वर्मा

स्त्री और पुरुष सामाजिक संरचना की दो इकाइयाँ हैं जो एक दूसरे की पूरक भी है और एक दूसरे से पृथक और स्वायत भी। परन्तु सामाजिक विकास की सदियों पुरानी प्रक्रिया ने स्त्री के पूरक होने को इतना महत्व दिया कि उसकी अपनी पहचान, उसकी स्वतंत्र सत्ता पूरी तरह लुप्त हो गई। सदियों से अपनी जड़े जमाये बैठे पितृसत्तात्मक समाज एवं पूजीवादी राज व्यवस्था के कारण महिलाएँ लैंगिक,शैक्षिक, आर्थिक एवं राजनीतिक भेदभाव तथा पारिवारिक, सामाजिक हिंसा कें बीच जीने को मजबूर है। आज महिलाएँ भ्रूण हत्या, दहेज हत्या और बलात्कार की शिकार हो रही हैं। आज देश की लगभग आधी आबादी महिलाओं की है पर महत्त्वपुर्ण क्षेत्रों मे अनकी भागीदारी अत्यल्प है। नीति निर्माण में महिलाओं की हिस्सेदारी नहीं के बराबर है।

साहित्य में स्त्री–विमर्श नारी के वितृसत्ता द्वारा निर्धारित सदियों पुराने ढ़ाँचे को तोड़ने का उपक्रम है। वह चिंतन की ऐसी सारणी है जिसमें स्त्री की स्वतंत्र पहचान, स्वतंत्र जीवन–शैली तथा स्त्री–संस्कृति के स्वतंत्र रूपो को पहचानने और स्वीकारने पर जोर दिया गया है। वह स्त्री के उन मारवीय अधिकारों की पुनर्प्राप्ति का वैचारिक संघर्ष है जिनसे उसे सदियों पूर्व बेदखल किया गया था। आधुनिक हिन्दी साहित्य में स्त्री–विमर्श अथवा स्त्री–चेतना से जुड़े प्रश्नों पर गंभीरता से विचार करने वाली प्रथम लेखिका है महादेवी वर्मा।

''मै नारी भरी दु:ख की बदली

विस्तृत नभ का कोई कोना

मेरा न कभी अपना होना

परिचय इतना इतिहास यही

उमड़ी थी कल, मिट आज चली।''

महादेवी वर्मा द्वारा लिखित ये मधुर पंक्तियां सन् 1920–25 के आस–पास की नारी की व्यथा है जो शिक्षा, जागृति, स्वतंत्रता–आन्दोलन और बदलती स्थितियों मे अपने आपको पहचानने की कोशिश कर रही थी। महादेवी वर्मा ने नारी जीवन के सभी आयामों को छुआ है। वे नारी को उसकी सम्पूर्णता में देखना चाहती है। महादेवी की रचनाओं में चाहे वह काव्य पक्ष हो अथवा गद्य पक्ष नारी विषयक भावनाओं का विश्लेषण विवेचन अत्यन्त दृढ़तापूर्वक हुआ है।

काव्य की जन्मस्थली करुणा ही है चाहे वे बाल्मीकि हो, भवभूति हो, पंत हो या महादेवी। करुणा ने सबके काव्य को छुआ और उसे कंचन बना दिया। महादेवी पीड़ा को अपने प्रियतम की सबसे बड़ी देन मानती हैं, देखिये निम्नलिखित पंक्तियाँ–

''अपने इस सूनेयन की मैं हूँ रानी मतवाली।

प्राणों का दीप जलाकर करती रहती दीवाली।।''

उनकी दृष्टि में पीड़ा और प्रिय परस्पर एक दूसरे से घुल मिल गए है। इसी से तो पीड़ा में ही उन्हें आनन्द आता है–

''क्या अमरो का लोक मिलेगा,

तेरी करुणा का उपहार।

रहने दो हे देव,

अरे यह मेरे मिटने का अधिकार।''

'रश्मि' की भूमिका में महादेवी ने लिखा है:–

'संसार साधारणतः जिसे दुःख और अभाव के नाम से जानता है वह मेरे पास नही है जीवन में बहुत दुलार, बहुत आदर और बहुत मात्रा में सब कुछ मिला है उस पर पार्थिव दुःख की छाया नही पड़ी। कदाचित यह उसी की प्रतिक्रिया है कि वेदना मुझे इतनी मधुर लगती है।''

महादेवी वास्तव में महादेवी है। उनकी अनुभूति साक्षात दुर्गा की तरह है जो शब्द रूपी सिंह की सवारी करती है। यह शब्द उनके काव्य और निबंधों में बृहतर सामाजिकता से सम्पृक्त होकर अभिव्यक्ति पाती है। आज स्त्री–विमर्श के अन्तर्गत स्त्री–जीवन से जुडे जिने प्रश्नों को उठाया जा रहा है, महादेवी के निबंधो मे वे

कई दशक पूर्व विवेचित और विश्लेषित हो चुके है। विशेष रूप से उनके निबंध–संग्रह 'श्रृंखला की कड़ियाँ' के निबंध उन्हें स्त्री कें मानवीय अधिकारों की प्रबल प्रवक्ता के रूप में स्थापित करते है। महादेवी कहती है– 'इस समय तो भारतीय पुरूष जैसे अपने मानोरंजन के लिए रंग–बिरंगे पक्षीपाल लेता है, उपयोग के लिए, गाय या घोड़ा पाल लेता है, उसी प्रकार वह एक स्त्री को भी पालता है, तथा अपने पालित पशु–पक्षियों के समान ही यह उसके शरीर और मन पर अपना अधिकार समझता है। हमारे समाज के पुरूषो के समय गुलाब सी खिली हुई स्वस्थ बालिका को पांच वर्ष बाद देखिए। उस समय, प्रौढ़ हुई दुर्बल संतानों की रोगिणी पीली माता में कौन सी विवशता, कौन सी रूला देने वाली करूणा न मिले।''

(श्रृंखला की वृड़ियाँ, पृष्ठ 102)

पर और पति के घर पर उसकी दशा का वर्णन करते हुए महादेवी कहती है– '' अपने पितृगृह में उसे वैसा स्थान मिलता है, जैसा किसी दुकान में उस वस्तु को प्राप्त होता है जिसके रखने और बेचने दोनों मे ही दुकानदार को हानि की संभावना रहती है। जिस घर में उसकें जीवन को ढलकर बनना पड़ता है उसके चरित्र को एक विशेष रूप रेखा धारण करनी पड़ती है, जिस पर वह अपनें शैशव का सारा स्नेह ढुलका कर भी तृप्त नही होती, उसी घर में वह भिक्षुक के अतिरिक्त और कुछ नही है। दुख के समय अपने आहत ह्रदय और शिथिल शरीर को लेकर वह विश्राम नही पाती, भूले के समय वह अपना लज्जित मुख उसके स्नेहांचल में नही छिपा सकती है और आपति के समय एक मुट्ठि अन्न की भी उस घर से आशा नही रख सकती। पतिगृह में या वह विद्वान पति की इच्छानुकूल विदूषी नही है तो उसका स्थान दूसरी को दिया जा सकता है, यदि वह सौदर्योपासक पति की कल्पना के रिक्त कर देने का आदेश दिया जा सकता है, यदि वह पति कामना का विचार करके संतान या पुत्रो की सेना नही दे सकती यदि वह रूम्ण है या दोषों का नितांत अभाव होंने पर भी पति की अप्रसन्नता की दोषी है तो भी उस घर में दासत्व स्वीकार करना पड़ेगा।

(श्रृंखला की कड़ियाँ)

महिलाओ की सामाजिक पराधीनता का विश्लेषण करने के क्रम में महादेवी ने विवाह–संस्था को भी प्रश्नों के घेरे में रखा है। उनका मानना है कि विवाह की संस्था पुरूष के लिए वही अर्थ नहीं रखती जो स्त्री कें लिए हैं। स्त्री कें लिए वह

जन्म –जन्मान्तर का संबंध होता है पुरूष के लिए ऐच्छिक अनुबंध–''चाहे वह स्वर्ण पिंजर की बन्दिनी हो या लौह पिंजर की, परन्तु बन्दिनी तो वह है ही और ऐसी कि जिसके निकट स्वतंत्रता का विचार तक पाप कहा जायेगा।''

नारी की दीन दशा महादेवी को क्षुब्ध कर देती है महादेवी कहती हैं– ''पुरूष अपने व्यावहारिक जीवन के लिए स्त्री पर उतना निर्भर नही है, जितना स्त्री को होन पड़ता है। स्त्री उसके सुख के उनके साधनों में एक ऐसा साधन है जिसके नष्ट हो जाने पर कोई हानि नही होती। एक प्रकार से पुरूष ने कभी उसके अभाव का अनुभव करना ही नहीं सीखा, इसी से उसे स्त्री के विषय में विचार करने की आवश्यकता भी कम पड़ी। स्त्री की स्थिति इससे विपरीत है। उसे प्रत्येक पग पर प्रत्येक सॉस के साथ, पुरूष से सहायता की भिक्षा माँगते हुए चलना पड़ता है।''

महादेवी ने नारी की विवशता को समझती है। उन्होंने वेश्या–जीवन पर यथार्थ वादी चिंतन प्रस्तुत किया है और गहरी संवेदनाव्यक्त की हैं–''इन स्त्रियों ने, जिन्हें गर्वित समाज पतिता के नाम से संबोधित करता आ रहा है, पुरूष की वासना की वेदी पर कैसा छोरतम बलिदान किया है इस पर कभी किसी ने विचार भी नही किया है। पुरुष की बर्बरता रक्त लोलुपता पर बलि होने वाले युद्धवीरों के चाहे जितने स्मारक बनाये जावें, पुरुष की अधिकार भावना को अक्षुण्ण रखने के लिए प्रज्वलित चिता पर क्षण भर में जल मिटाने वाली नारियों के नाम चाहे इतिहास के पृष्ठों में सुरक्षित रह सके, परंतु पुरुष की कभी न बुझने वाली वासनाग्नि मे हँसते–हँसते अपने जीवन को तिल–तिल जलाने वाली इस रमणियों को मनुष्य जाति ने कभी दो बूँद आँसू पाने का अधिकारी भी नही समझा। कभी कोई ऐसा इतिहासकार न हुआ जो इन मूक प्राणियों की दुखभरी जीवन गाथा लिखता, जो इनके रोम–रोम को जकड़ लेने वाली श्रृंखला की कड़ियाँ ढालने वालो के नाम गिनाता और जो इनके मधुर जीवन पात्र में तिक्त विष मिलाने वाले का पता देता।''

कोई भी स्त्री विपरीत परिस्थिति या विवशता वश ही वेश्या बनती है। हमारा यह बर्बर समाज उनका शोषण भी करता है और उन्हें पतिता भी कहता है, यह बड़ी आश्चर्यजनक बात है।

स्त्री की सामाजिक दासता के मूल में है उसकी आर्थिक परनिर्भरता। महादेवी की सुलझी हुई दृष्टि ने इस यथार्थ को बखूबी पहचाना था–''यदि उन्हें अर्थ–संबधी

वे सुविधाएँ प्राप्त हो सके जो पुरूषों को मिलती आ रही हैं ता न उनका जीवन निष्ठुर कुटुम्बियों के लिए भार बन सकेगा और न वे गलित अंग के समान समाज से निकाल कर फेंकी जा सकेंगी, प्रत्युत वे अपने शून्य क्षणों को देश के सामाजिक तथा राजनीतिक उत्कर्ष के प्रयत्नों से भरकर सुखी रह सकेगी।''

महादेवी, शिक्षित स्त्रियों को समाज निर्माण हेतु आंमत्रित करती हैं। वे चाहती हैं कि स्त्रियाँ भी साहित्य रचना करे। उनका मानना है कि ''साहित्य यदि स्त्री के सहयोग से शून्य हो तो उसे आधी मानव जाति के प्रतिनिधित्व से शून्य समझना चाहिए। पुरूष के द्वारा नारी का चित्रण अधिक आर्दश बना सकता है, परंतु अधिक सत्य नही, विक्रति से अधिक निकट पहुँच सकता है, परंतु यर्थाथ के अधिक समीप नही। पुरूष के लिए नारीत्व अनुमान है, परन्तु नारी के लिए अनुभव। अतः अपने जीवन का जैसा सजीव चित्र वह हमें दे सकेगी, वैसा पुरूष बहुत साधना के उपरांत भी शायद ही दे सके।''

यह सत्य है कि आज स्त्री केवल रमणी और भार्या नहीं रही। उसने घर की चारदीवारी लांघी है और बाहर की दुनिया में पुरूष के कंधे से कंधा मिलाकर चलने की ईमानदार कोशिश कर रही है। परन्तु इससे पितृसत्ता द्वारा निर्मित सारे बंधन कट गए हैं, ऐसा मानना भूल होगी। स्त्री की स्वतंत्र चेतना को पुरूष–वर्चस्व ने अपने लिए चुनौती के रूप में स्वीकारा है। पुरूषों ने स्त्री के दमन के नये–नये तरीके अपनाये है। महादेवी कहती हैं– ''यदि रूढ़ियो का अवलंब लेने वाली बहिने गृहो मे अनेक यंत्रणएँ रो रोकर सह रही है तो बंधनों को तोड़ फेंकने वाली विदुषियाँ बाहर असंख्य अपमानों का अविृचल लक्ष्य बनकर उससे भी कठिन अग्निपरीक्षा में उत्तीर्ण होने की आशा में मिथ्या हँसी हँस रही है।''

अपनी कविता में नारी–जीवन की त्रासदी को रेखांकित करते हुए उन्होंने लिखाः–

''हुई सोने की प्रतिभा क्षार

साधनाए बैठी हैं मौन,

हमारा मानस कुंज उजाड़

दे गया नीरव रोदन कौन?

तो अन्यत्र इस स्थिति का समाधान भी उन्होंने दिया है–

''मधुबेला है आज अरे तू

जीवन पाटल फूल

डर मत रे सुकुमार

तुझे दुलराने आये शूल।''

इस प्रकार महादेवी जी ने अपनी कविता, संस्मरण और रेखाचित्र के माध्यम से भारतीय नारी की अन्तर्वेदना को अंकित किया है। कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि महादेवी जी अपनी रचनाओं के माध्यम से स्त्री–विमर्श को एक नई ऊँचाई प्रदान करती हैं।